Date: 20 **जुलाई** 2023

भित्ति चित्रकला

पाठ्यक्रम: जीएस 1 / कला और संस्कृति

संदर्भ-

- रुद्रगिरि पहाड़ी, जो आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले में है , महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और पुरातात्विक आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले में अत्वमपेट मंडल के ओरवाकल्लू गांव में स्थित रुद्रगिरि पहाड़ी एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक अतीत और उल्लेखनीय पुरातात्विक स्मारकों का साक्षी है।

प्रमुख बिन्दु-

- **स्थान:** पूर्वी घाट **के बीच स्थित रुद्रगिरि पहाड़ी** में पश्चिम की ओर अपनी तलहटी में पांच प्राकृतिक रूप से निर्मित रॉक शेल्टर हैं। यह आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले के ओरवाकल्लू गांव में स्थित है।
- यह साइट 5000 ईसा पूर्व के आसपास **मेसोलिथिक काल से प्रागैतिहासिक शैल चित्रों** के संयोजन और 1300 ई. के काकतीय राजवंश के उत्कृष्ट कलाकृति का एक सुंदर आकर्षण प्रस्तुत करता है।

कलात्मक प्रतिभा

- **शारीरिक स्थिति:** ये गुफाएं काकतीय काल की कलात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करती हैं। हालांकि , इनमें से कई समय के साथ क्षतिग्रस्त हो गई हैं, किंतु कुछ रेखाचित्र या कलाकृतियां वर्तमान में भी मौजूद हैं।
- **रंग:** चीनी मिट्टी (white kaolin) और विभिन्न स्रोतों से प्राप्त विभिन्न रंगों से चित्रित ये पेंटिंग महाकाव्य 'रामायण' के सुरम्य दृश्यों को दर्शाती हैं।

मनोरम भित्ति चित्र-

- **पहाड़ी के दक्षिणी छोर से शुरू होने वाली पहली गुफा**, वानर भाइयों – बाली और सुग्रीव **के बीच गहन लड़ाई को चित्रित करते हुए एक कथा भित्ति चित्र प्रस्तुत करती है।**

- **मध्य गुफा में,** भगवान हनुमान **का एक भव्य रेखाचित्र** शंख और अग्नि वेदी (यज्ञ वेदी) के पवित्र प्रतीकों के साथ है। हनुमान को अपने हाथ में संजीवनी पहाड़ी ले जाते हुए चित्रित किया गया है , जो लक्ष्मण के जीवन को बचाने के लिए प्रतीक है।
- काकतीय कलाकारों द्वारा हनुमान जी की सुंदर आकृति को उसी चट्टान पर चित्रित किया गया है , जिस पर एक अद्वितीय 'अंजलि' मुद्रा में चित्र है, जो दिव्य भेंट में अपने हाथ जोड़ रहा है।
- **तीसरी गुफा में** मेसोलिथिक युग **के प्रागैतिहासिक शैल चित्र हैं**।

काकतीय वंश

- काकतीय राजवंश एक तेलुगु राजवंश था जिसने 12 वीं और 14 वीं शताब्दी के **बीच वर्तमान भारत में पूर्वी दक्कन क्षेत्र के अधिकांश हिस्सों पर शासन किया था।**
- **क्षेत्र**: इसमें वर्तमान तेलंगाना और आंध्र प्रदेश का अधिकांश हिस्सा और पूर्वी कर्नाटक , उत्तरी तमिलनाडु और दक्षिणी ओडिशा के कुछ हिस्से शामिल थे।
- **राजधानी:** ओरुगलु (वारंगल)।
- **प्रमुख शासक**: प्रारंभिक काकतीय शासकों ने दो शताब्दियों से अधिक समय तक राष्ट्रकूट और पश्चिमी चालुक्यों के सामंतों के रूप में कार्य किया। उन्होंने **1163 ईस्वी में प्रतापरुद्र प्रथम के तहत संप्रभुता ग्रहण की।**
  - **गणपति देव (**1199-1262) ने 1230 के दशक के दौरान काकतीय भूमि का विस्तार किया और गोदावरी और कृष्णा नदियों के आसपास के तराई डेल्टा क्षेत्रों को नियंत्रण में लाया।
  - **रुद्रमा देवी** (1262-1289) जो भारतीय इतिहास की कुछ रानियों में से एक हैं। मार्को पोलो ने अपने शासनकाल के दौरान भारत का दौरा किया। उसने काकतीय क्षेत्र में देवगिरि के यादवों के हमलों को बताया गया हैं।

स्रोत: TH

Rajiv Pandey

yojnaias.com

भारत-यूएई संबंध

पाठ्यक्रम: जीएस 2 /

संदर्भ-

- हाल ही में ,भारत और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) ने दो समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस सौदे पर प्रधानमंत्री की हाल ही में अबू धाबी, संयुक्त अरब अमीरात की यात्रा के दौरान हस्ताक्षर किए गए थे।

प्रमुख बिन्दु-

- भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) और संयुक्त अरब अमीरात के केंद्रीय बैंक ने 15 जुलाई को सीमा-पार लेनदेन के लिए दोनों देशों की स्थानीय मुद्राओं के इस्तेमाल को संभव बनाने के लिए एक ढांचा स्थापित करने पर सहमति व्यक्त की।
- दूसरा, भारत के **यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) को उसके यूएई-समकक्ष इंस्टेंट पेमेंट प्लेटफॉर्म (आईपीपी) के साथ जोड़ना है।**

स्थानीय मुद्रा निपटान प्रणाली (LCSS)

- यह सभी चालू और अनुमत पूंजी खाता लेनदेन **को कवर करेगा।**
- स्थानीय मुद्रा निपटान प्रणाली (LCSS) **निर्यातकों और आयातकों को अपनी संबंधित घरेलू मुद्राओं में भुगतान करने में सक्षम बनाएगी** और INR-AED विदेशी मुद्रा बाजार के विकास को सक्षम करेगी।
- यह दोनों देशों के बीच निवेश और प्रेषण को बढ़ावा देने में भी मदद करेगा। मोटे तौर पर, यह व्यवस्था लेनदेन के लिए लेनदेन लागत और निपटान समय को अनुकूलित करने में मदद करेगी , जिसमें संयुक्त अरब अमीरात में रहने वाले भारतीयों से प्रेषण भी शामिल है।
- स्थानीय मुद्रा में निर्यात अनुबंधों और चालानों को अनुमानित करने पर ध्यान केंद्रित करने से विनिमय दर जोखिमों को रोकने में मदद मिलती है (जैसे कि जब तीसरी मुद्रा का उपयोग मानक के रूप में किया जा रहा है) , जो प्रतिस्पर्धी मूल्य निर्धारण की खोज करने की गुंजाइश को और सुविधाजनक बनाता है।
- यह दोनों देशों की बैंकिंग प्रणालियों **के बीच सहयोग के लिए अधिक अवसर पैदा कर** सकता है, जिससे दोनों के लिए व्यापार और आर्थिक गतिविधि के विस्तार में योगदान मिल सकता है।

व्यापार-

- मई 2022 में व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते के कार्यान्वयन के बाद से यूएई-भारत व्यापार में लगभग 15% की वृद्धि हुई है। तेल खरीद सहित द्विपक्षीय व्यापार लगभग 85 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया है , जिसमें से भारत को यूएई का निर्यात लगभग 50 बिलियन डॉलर रहा।
- भारत से संयुक्त अरब अमीरात को निर्यात की जाने वाली प्रमुख मदों में खनिज ईंधन , खनिज तेल और उत्पाद आदि शामिल हैं।
- भारत द्वारा आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएं पेट्रोलियम क्रूड और पेट्रोलियम से संबंधित उत्पाद हैं।
- यूएई **भारत में चौथा सबसे बड़ा निवेशक है। अप्रैल** 2000 और सितंबर 2022 के बीच इसका संचयी एफडीआई प्रवाह लगभग 15.2 बिलियन डॉलर था।

भारत के UPI और UAE के इंस्टेंट पेमेंट प्लेटफॉर्म (IPP) को इंटरलिंक करना

- भारतीय रुपये और संयुक्त अरब अमीरात के दिरहम में भुगतान करने की इजाजत देने का मकसद द्विपक्षीय रूप से इन दोनों मुद्राओं के इस्तेमाल को बढ़ावा देना है , जिससे लेनदेन से निपटने के लिए मध्यस्थ के रूप में अमेरिकी डॉलर जैसे तीसरे देश की मुद्रा पर निर्भरता कम होगी।
- दोनों देशों के केंद्रीय बैंकों के बीच हुए समझौता ज्ञापन के मुताबिक , इन देशों के निर्यातकों और आयातकों सहित सभी चालू खाता भुगतान और कुछ अनुमति प्राप्त पूंजीगत खाते से जुड़े लेनदेन का निपटान रुपये या दिरहम का इस्तेमाल करके किया जा सकता है।
- यूपीआई-आईपीपी लिंकेज से रेमिटेंस को घर भेजना आसान और सस्ता हो जाएगा , खासकर कम वेतन पाने वालों के लिए।
  - इससे पहले, भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (NPCI) ने सीमा पार वास्तविक समय धन हस्तांतरण की सुविधा के लिए सिंगापुर के पेनाउ के साथ सहयोग को अंतिम रूप दिया।
- विश्व बैंक ने 2023 माइग्रेशन एंड डेवलपमेंट ब्रीफ में उल्लेख किया कि भारत ने साल-दर-साल आधार पर 2022 में प्रेषण में 24.4% की वृद्धि का अनुभव किया, जो 111 बिलियन डॉलर था।
  - जीसीसी (खाड़ी सहयोग परिषद) देशों से प्रेषण प्रवाह, जो देश के कुल प्रेषण प्रवाह का लगभग 28% है।

रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण का महत्व-

- अंतर्राष्ट्रीयकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें **सीमा पार लेनदेन में रुपये के उपयोग को** बढ़ाना शामिल है। इसमें आयात और निर्यात व्यापार और फिर अन्य चालू खाता लेनदेन के लिए रुपये **को बढ़ावा देना शामिल है**, इसके बाद पूंजीगत खाता लेनदेन में इसका उपयोग किया जाता है।
- **स्थानीय मुद्रा में अंतरराष्ट्रीय व्यापार रुपये में भुगतान करने की अनुमति मिलेगी**, जिसे भागीदार देश के संवाददाता बैंक के विशेष खाते में जमा किया जाएगा , जबकि निर्यातकों को निर्दिष्ट विशेष खाते में शेष राशि से भुगतान किया जाएगा।
- **सीमा पार लेनदेन में रुपये का उपयोग भारतीय व्यवसायों के लिए मुद्रा जोखिम को कम करता है।** मुद्रा अस्थिरता से सुरक्षा न केवल व्यापार करने की लागत को कम करती है , यह व्यापार के बेहतर विकास को भी सक्षम बनाती है, जिससे भारतीय व्यवसायों के लिए विश्व स्तर पर की संभावना को बढ़ावा दिया जाता है।
- रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण से **विदेशी मुद्रा भंडार रखने की आवश्यकता कम हो जाती है।** विदेशी मुद्रा पर निर्भरता कम करने से भारत बाहरी झटकों के प्रति कम संवेदनशील हो जाएगा।

स्रोत: IE

Rajiv Pandey

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com